श्री जगदीश चन्द्र जी आहूजा, इन्चोली

परमहंस पूज्य महाराज रामरतन दास जी ने सशक्त आत्मा को पहचाना-अपने पास बुलाया-जाना व परखा-सही पात्र समझकर श्री मुखवाणी के मूल एवं गूढ़ रहस्यों को समझाया। एक दिन बातों ही बातों में श्री महाराजजी ने कहा "जगदीश" श्री पद्मावती पुरी से वापसी पर मेरी बैठक अब इंचोली में होगी। कारण-कारज से विधि का विधान और श्रीराजजी का कुछ ऐसा हुक्म हुआ कि श्री महाराज जी ने पद्मावतीपुरी पहुँचने से पूर्व ही अपने नश्वर शरीर को त्याग दिया ऐसा लगा उत्तर भारत का सुन्दरसाथ अनाथ हो गया–तभी कुछ ऐसी प्रेरणा हुई कुछ ऐसी आत्म अनुभूति हुई "मैं इन्चोली में हूँ" देखते ही देखते इन्चोली फलने और फूलने लगा। अपने प्राणों से प्यारे सतगुरु का आशीर्वाद अंग संग जान, आपने इन्चोली मन्दिर की प्रगति का बीड़ा उठाया समय ने सोने की तरह आग की कसौटियों पर परखा-पर दृढ़ निश्चय श्री जी की वाणी और श्री सद्गुरु के आशीर्वाद का सहारा लेकर कदम जो आगे बढ़े तो बढ़ते ही गये–मानो एक नया जागनी अभियान छिड़ गया। सर पर कफ़न बाँधे–अपने धनी के लिय सर्वस्व बलिदान करने वाले सुन्दर साथ इकट्ठे होने लगे। पल-पल मिला वाणी का अमृत और कठिन अनुशासन की परीक्षाओं से गुजरते हुए सुन्दर साथ न बना दिया इसे तपोवन भूमि–आनन्द भूमि और धाम-धरा। प्रत्येक वर्ष १०८ अखण्ड पारायणों के सफल आयोजन के बाद इस वर्ष लगातार ६ महीनों तक वाणी के १२०० साप्ताहिक पारायण, जिनका समाप्ति पूजन आपके सामने है। मान व सम्मान की परिधियों से ऊपर उठकर पूरे समाज की एकता की प्रबल कामना करने वाले और सारे विश्व को अक्षरातीत पारब्रह्म महामति श्री प्राणनाथ का तारतम ज्ञान दे–विश्व को अखण्ड करने का संकल्प करने वाले श्री जगदीश चन्द्र जी की साधना को देखकर ही तो कितने सुन्दर साथ आत्म-विभोर, आत्म विह्वल होकर कह उठते है–हमारी उम्र भी आपको लग जाय। ब्रह्म वाणी का यह कारवाँ यूं ही आगे और आगे बढ़ता जाये।

"सम्पादक"